अध्याय–5

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान जोरहाट

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, वर्ष 1988 में जोरहाट असम में स्थापित किया गया। संस्थान के मुख्य उद्देश्य हैं। पूर्वोत्तर राज्यों के जैवविविधता संसाधनों का संरक्षण, निम्नीकृत वनों का पारि–पुनरूद्धार और झूम खेती पद्धतियों का प्रबन्ध, वन संसाधन–बांस और बेंत के सतत् उपयोग के लिए प्रौद्योगिकी का विकास, पूर्वोत्तर क्षेत्र की महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों का आनुवंशिक सुधार और प्रवर्धन, वनीकरण एवं वन संवर्धन प्रबन्ध, वानिकी में नाशीजीवों एवं रोगों का प्रबन्ध तथा उपभोक्ता समूहों में प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण।

वर्ष 2004–2005 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1: पौधशाला में मेलाइना आर्बोरीया और डिप्टीरोकार्पस रीटूसस के बीज और मृदा जनित रोगों का प्रबन्ध [आर.एफ.आर.आई / एफ.पी.–2005 / 2000–2004]

उपलब्धियां : मेलाइना आर्बोरीया के प्रमुख पौधशाला रोगों की पहचान की गई। कवकी रोगजनकों द्वारा मेलाइना आर्बोरीया के बीज और पौधों में क्षतियों को न्यूनतम करने के लिए नियंत्रण रणनीतियां विकसित की गई।

डिप्टीरोकार्पस रीटूसस के बीज और पौध रोगों पर कार्य पथप्रदर्शक है और पहली बार सूचित और वर्णित किया गया। डी. रीटूसस के बीज एवं पौध रोगजनकों के प्रबन्ध के लिए उपभोक्ता–अनुकूल प्रोटोकॉल विकसित किया गया।

परियोजना 2: असम और अरूणाचल प्रदेश की कुछ आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वन पादप प्रजाति के लिए जैवउर्वरक के रूप में बी.ए.एम का विकास [आर.एफ.आर.आई / एफ.पी.–07 / 2000–2004]

उपलब्धियां : 20 ईंधन काष्ठ प्रजाति के कैफीटेरिया रोपण में वी.ए.एम. कवक की विविधता एवं गतिकी का मूल्यांकन किया गया। प्रतिशत जड़ उपनिवेसन की रेंज एल.निटिडा (10.67%) से ऐल्बिजिया लेबैक (29.17%) एवं एस.सेमन (29.33%) तक उल्लेखनीय रूप से अलग–अलग थी। बीस प्रजातियों के साथ सम्बद्ध वी.ए.एस. बीजाणु आबादी की मौसमीय विभिन्नता के अध्ययन ने दर्शाया कि बीजाणु आबादी ने फरवरी से बढ़ना शुरू किया और जून के महिने में अधिकतम तक पहुंच गयी।

वर्ष 2004–2005 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1: उत्तर–पूर्व भारत में व्यवहार्य आर्थिक मॉडलों के विकास के लिए विभिन्न विद्यमान भूमि उपयोग प्रणालियों का मूल्यांकन [आर.एफ.आर.आई / एम.सी.–06 / 2003–2008]

स्थिति : नागालैण्ड में विभिन्न भूमि उपयोग प्रणालियों के उत्पादकता आँकड़ों का सर्वेक्षण, चयन और संग्रहण प्रगति पर है। नागालैण्ड में निर्धारित एव झूम ,खेती, कदम और सागौन रोपण का लागत लाभ अनुपात निकाला। सिलोनजात, कारवी एंगलौंग के अनन्नास, सागौन और बांस रोपणों के मृदा पोषक स्तर का मूल्यांकन किया गया।

स्थापित खेती

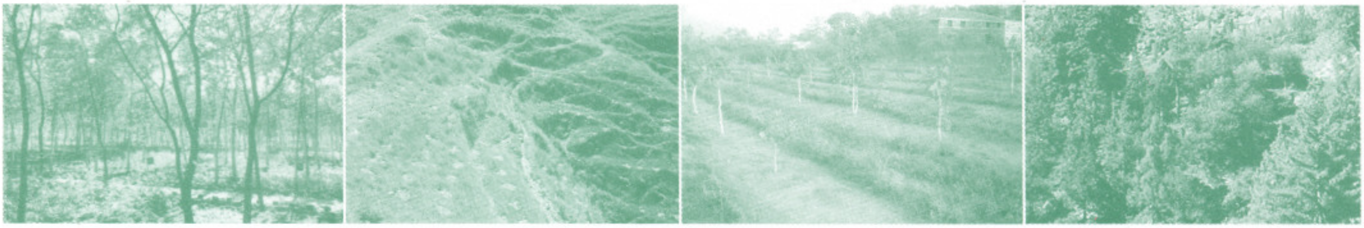

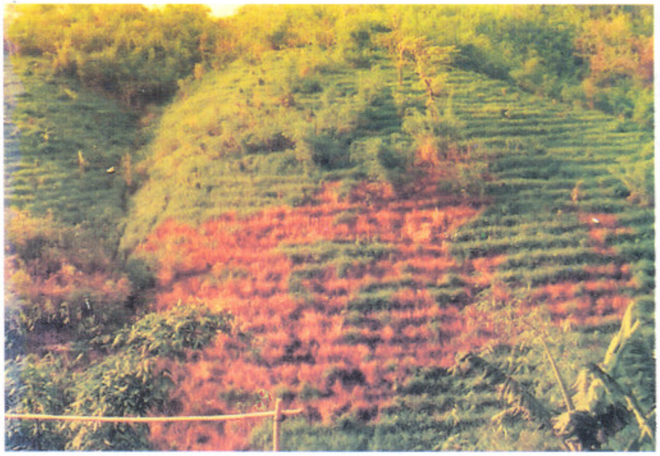

अन्नास खेती

परियोजना 2: चयनित ऊर्जा रोपण प्रजाति की वृद्धि, जैवमात्रा और ऊर्जा उत्पादन क्षमता [आर.एफ.आर.आई/एस.सी.–07/2003–2006]

स्थिति : नाहारोनी क्षेत्र स्टेशन में क्षेत्र परीक्षण स्थापित किया गया और विभिन्न ईंधन काष्ठ प्रजातियों के वृद्धि आँकड़े के संग्रहण के लिए बार–बार क्षेत्र भ्रमण किया गया। नमूना वृक्षों को काटा गया और जैवमात्रा आकलन पूरा किया। विभिन्न ईंधन काष्ठ प्रजातियों के उष्मीय मान का भी निर्धारण किया गया। तीन आशाजनक प्रजातियों की, उनके वृद्धि पैरामीटरों एव उच्च ऊर्जा मानों के आधार पर, पहचान की गई।

मैलोटस एल्बस : आशाजनक ईंधन काष्ठ प्रजाति

परियोजना 3: असम की गिब्बौन वन्यप्राणि अभ्यारण्य के डिप्टीरोकार्प वन पर पारिस्थितिकीय अध्ययन [आर.एफ.आर.आई/ई.ई–04/2003–2006]

स्थिति : गिब्बौन वन्यप्राणि अभ्यारण्य में सदाहरित वन के वितरण, प्रचुरता विरलता और प्रोफाइल स्कैच के सन्दर्भ में डिप्टीरोकार्प वन के पारिस्थितिकीय मूल्यांकन किया जा रहा है। क्षेत्र के प्राकृतिक, रोपण और विक्षुब्ध स्थलों में वृक्ष प्रजातियों की गणना की गई। प्रारम्भिक आँकडों ने दर्शाया कि डिप्टीरोकार्प के कमजोर पुनर्जनन के लिए मोटे छत्र आवरण और जीवीय हस्तक्षेप उत्तरदायी हैं।

परियोजना 4: पाइनस केसिया (खासी पाइन) का आनुवंशिक सुधार [आर.एफ.आर.आई./टी.आई.–08/2002–2005]

स्थिति : स्थापित बीज उत्पादन क्षेत्र के मानीटरन एवं मूल्यांकन का कार्य प्रगति पर है। मेघालय में तैतीस धन वृक्षों का चयन किया गया। धन वृक्षों से बीज एकत्र किए और पौध बीज उद्यान की स्थापना करने के लिए इनकी सन्ततियां उगाई गई। विभिन्न धन वृक्षों के बीज एवं शंकु एकत्र किए गए। खासी पाइन में शंकु क्लस्टरों की उपस्थिति का एक नया अभिलेख भी अभिलिखित किया गया।

धन वृक्ष खासी पाइन

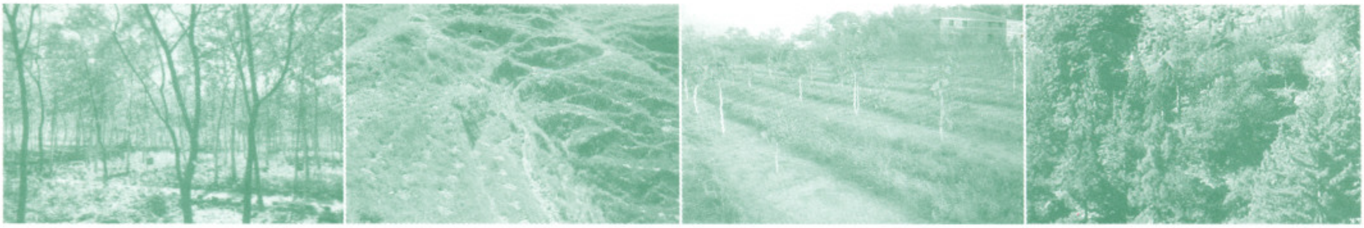

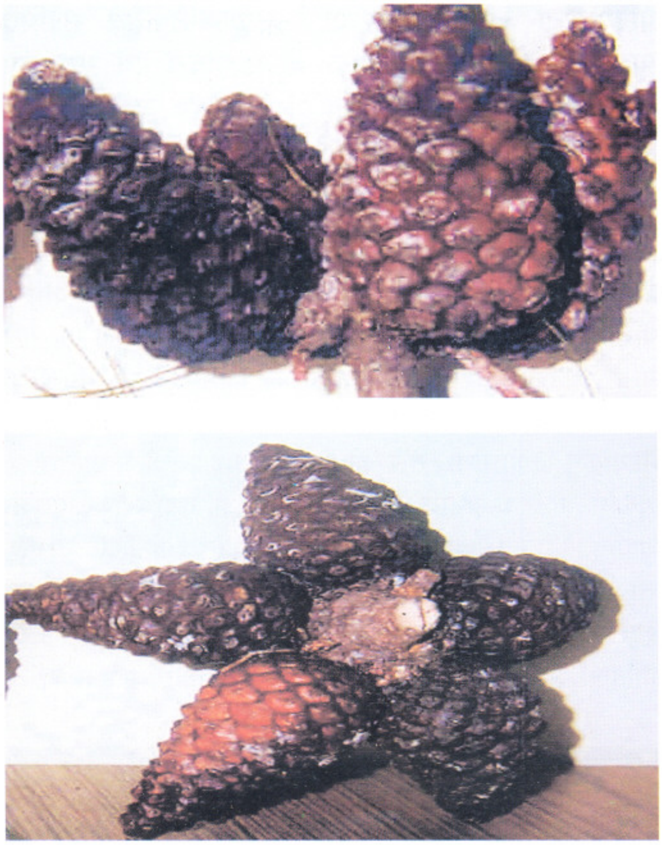

शंकु समूह

परियोजना 5: मेलाइना आर्बोरीया में विभिन्न लक्षणों के लिए विभिन्न क्लोनों और सन्ततियों का स्थायित्व परीक्षण [आर.एफ.आर.आई / टी.आई.–10 / 2003–2006]

स्थिति : राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सन्तति परीक्षणों का मूल्यांकन एवं मानीटरन प्रगति पर है। बीज उद्यानों से बीज के संग्रहण और अन्तराल भराव के लिए विभिन्न संस्थानों के लिए आपूर्ति का काम पूरा किया गया।

परियोजना 6: चेरापूंजी, मेघालय में अत्यधिक अपरदित स्थल का सुधार [आर.एफ.आर.आई / एस.एम.–04 / 2003–2006]

स्थिति : प्रायोगिक क्षेत्र में मई, 2004 के दौरान एलनस नीपेलेन्सिस और एक्सबुकलेन्डिया पापुलेनिया का दुबारा रोपण किया गया। वृद्धि और उत्तरजीविता आँकड़े अभिलिखित किए। एक्सबुकलेन्डिया पापुलेनिया और एलनस नीपेलेन्सिस की उत्तरजीविता प्रतिशतता क्रमशः 98.09% और 96.87% पाया गया। रोपण के छः महिने बाद यह देखा गया कि एलनस नीपेलेन्सिस के मामलें में उपचार संयोजन $P_2W_1M_0F_1$ अच्छी वृद्धि दर्शाता है जबकि एक्सबुकलेन्डिया पापुलेनिया के लिए $P_1W_1M_1F_1$ उच्चतम वृद्धि देते हैं।

पुनर्रोपित पौधे

परियोजना 7: बांस और बेतों की वितरण गतिकी पर अध्ययन और इनका पर–स्थाने संरक्षण [आर.एफ.आर.आई / ई.ई.–03 / 2004–2007]

स्थिति : 3 बांस प्रजातियों का पर–स्थाने संरक्षण पूरा किया गया। आकारिकी के आधार पर विभिन्न बांस प्रजातियों की पहचान का काम प्रगति पर है। वृद्धि आँकड़ों का अभिलेखन और प्रवर्ध्यों / नयी नालों के रखरखाव का कार्य प्रगति पर है।

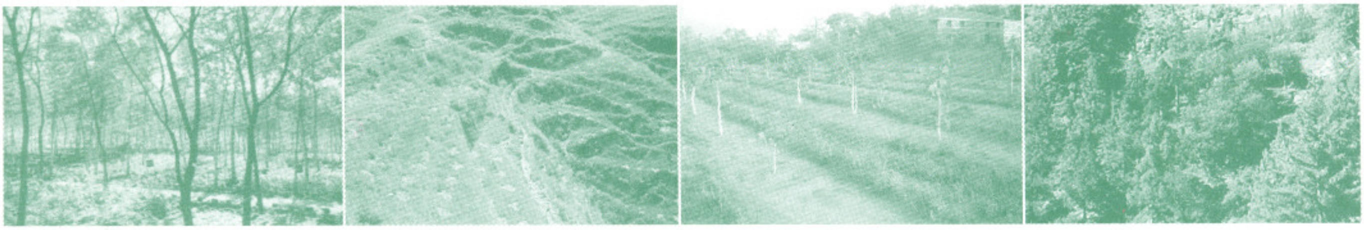

परियोजना 8: पूर्वोत्तर भारत की चयनित औषधीय पादपों के जननदृव्य संग्रहण, संरक्षण और बहुमात्र गुणन [आर.एफ.आर.आई / ई.ई–2005 / 2003–2006]

स्थिति : वर्षा वन अनुसंधान संस्थान परिसर में औषधीय पादपों की पांच विभिन्न चयनित प्रजातियों (बाकोपा मोनीरी, एन्ड्रोग्रेफिस पेनिकुलाटा, प्लम्बेगों जीलेनिका, प्लम्बेगो इंडिका और एस्पेरेगस रेसीमोसा) के संग्रहण एवं पर–स्थाने संरक्षण पूरा किया गया। पादप प्रजाति की पहचान और संग्रहण के रख–रखाव प्रगति पर है।

परियोजना 9: विभिन्न अन्तिम उपयोगों के लिए चयनित बांस प्रजातियों के जननद्रव्य मूल्यांकन [आर.एफ.आर.आई / एस.एम–03 / 2003–2006]

स्थिति : विखण्डित भूखण्ड अभिकल्प में क्लोनीय परीक्षण स्थापित किया गया। नाहारानी स्टेशन में छः माह के पौधें और 11 माह पुराने परीक्षणों के वृद्धि आँकड़े एकत्र किए गए। मूलोत्पत्ति के लिए डेन्ड्रोकैलामस हैमिल्टोनाई के धन गुल्मों का परीक्षण किया। बम्बूसा बाल्कुआ, बम्बूसा न्यूटन्स, बम्बूसा टूल्डा और डेन्ड्रोकैलामस हैमिल्टोनाई के उन्नत रोपण स्टॉक पोषित किया। नियमित अन्तरालों पर करीब 3200 शाखाओं एवं आवर्ती प्रबन्ध कार्य किया जा रहा है।

परियोजना 10: संयुक्त वन प्रबन्ध द्वारा सक्षम वन संसाधन प्रबन्ध के लिए गांव स्तर समिति का क्षमता निर्माण [आर.एफ.आर.आई / सी.एफ.ई.–01 / 2002–2006]

स्थिति : स्थानीय समस्याओं की पहचान के लिए क्षेत्र का संसाधन सर्वेक्षण किया और पी.आर.ए. द्वारा समस्या रैंकिंग के आधार पर सूक्ष्म योजना मॉड्यूल का विकास किया। वैज्ञानिक उपचारी उपायों का सुझाव दिया गया ताकि खास समस्याओं से पार पाया जा सके। स्थानीय समुदायों की प्रजाति पसन्द के आधार पर कृषि वानिकी मॉडलों के लिए खाका अभिकल्पित तैयार किया। किसानों में तकनीकी जागरूकता के सृजन के लिए और अत्यधिक दीर्घ आयु हेतु उपचारित बासों का उपयोग करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु द्वीपसमूह के 6 गांवों में बांस उपचार तकनीक का प्रदर्शन किया गया।

परियोजना 11: चयनित आर्द्र–उष्णकटिबंधीय सुरभित पादपों से सुगन्धित उत्पादों के उत्पादन एवं गुणवत्ता विशेषकों पर अध्ययन [आर.एफ.आर.आई / सी.एफ.ई.–02 / 2002–2005]

स्थिति : किसानों, गैर सरकारी संगठनों और उद्यमियों द्वारा अपनायी जा रही फसल, फसल कटान उपरान्त, निष्कर्षण और भण्डारण पद्धतियों के सम्बन्ध में सूचना एकत्र की गई। विभिन्न परिपक्वता अवस्थाओं के तहत पादपों से पत्ती नमूनों का तेल मात्रा के लिए विश्लेषण किया गया। विभिन्न पत्ती नमूनों के इन्द्रियग्राही लक्षण, नमी मात्रा और ताजे से शुष्क भार अनुपात का मूल्यांकन किया गया। तेल की पुर्नप्राप्ति पर पटचौली पत्तियों के शुष्कन मोड के प्रभाव का अध्ययन किया गया और उपयुक्त शुष्कन विधि का सुझाव दिया। पटचौली पत्तियों के लिए टी.एल.सी. फिंगरप्रिन्टिंग की गई ताकि यहां तक की शुष्क एवं पाउडर रूप में भी पत्ती कच्चे पदार्थ की विश्वसनीयता के लिए भौतिक–रासायनिक पैरामीटरों का विकास किया जा सके।

पटचोली तेल का निष्कर्षण

निधानी तेल जीवन पर पात्रों के परीक्षण प्रभाव

पटचोली पत्तियां

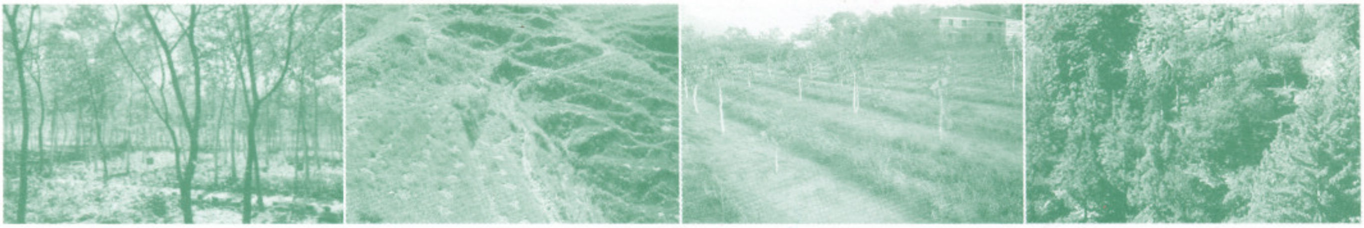

वर्ष 2004–2005 में शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1: डिप्टीरोकार्पस रीटूसस का आनुवंशिक सुधार और क्लोनीय प्रवर्धन [आर.एफ.आर.आई.–11/2004–2007]

स्थिति : कुछ सन्ततियों में जल्दी पुष्पन और फल स्थापन को देखते हुए विभिन्न सन्ततियों के पुष्पीय व्यवहार और फल स्थापन का अध्ययन किया गया ताकि इस संकटस्थ प्रजाति के संरक्षण के लिए प्रचुर मात्रा में बीज प्राप्त करने की सम्भावना का पता लगाया जा सके। पुष्पण और फल स्थापन के लिए विभिन्न सन्ततियों में महत्वपूर्ण विभिन्नता देखी गयी। 105 दिन के पुष्पण औसत अवधि के साथ पुष्पण की अवधि जून से जनवरी तक है। सभी सन्ततियों में, फलन 1.63 से 14.28 % तक अभिलिखित किया गया। कुछ सन्ततियों में पहले पुष्पण में 0.08% से कम फल स्थापन देखा गया।

सन्तति प्रदर्शन मूल्यांकन में, विभिन्न विशेषकों के लिए सभी सन्ततियों में महत्वपूर्ण विभिन्नता देखी गयी। प्रजाति के एक उपयुक्त प्रोटोकॉल का विकास करने के लिए क्लोनीय प्रवर्धन परीक्षण प्रगति पर हैं।

फूल और फल पतन

परियोजना 2: मेलाइना आर्बोरीया (रॉक्सब.) के एक गंभीर नाशीजीव, केलोपीपला लीयाना लेटर, के प्रबन्ध के लिए एक पारि–अनुकूल रणनीति का विकास [आर.एफ.आर.आई/एफ.ई.– 11/2004–2007]

स्थिति : व्यूवेरिया बेसियाना और मीटारहिजियम एनिसोप्लिया की विभिन्न कीट समूहों से केलीपीपला लीयाना के प्राकृतिक शत्रुओं के रूप में पहचान की गई है। सी.लीयाना के लार्वल एवं वयस्क दोनों अवस्थाओं के विरूद्ध कीटरोगजनक कवक प्रभावी पाया गया। बी. बेसियाना के बहुमात्र उत्पादन के लिए बेकरी अपशिष्ट/खाली ब्रेड की उपयुक्त तत्व में से एक के रूप में पहचान की गई।

कैलोपीपला लीयाना पर ब्यूवेरिया बेसियाना का रोगजनक प्रभाव

परियोजना 3: भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए पटचौली आधारित व्यवहार्य कृषिवानिकी मॉडलों का विकास [आर.एफ.आर.आई/सी.एफ.ई.–04/2004–2007]

स्थिति : जड़ ट्रेनरों में कायिक गुणन द्वारा पटचौली की 4000 पादपिकाएं उगाई गई। फलीदार फसलों के साथ पार्श्वमार्ग शस्योत्पादन परीक्षण तैयार किए गए। स्टेशन पर तथा फार्म पर कृषि वानिकी परीक्षण को तैयार करने का कार्य प्रगति पर है।

वर्ष 2004–2005 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

कोई नहीं

वर्ष 2004–2005 के दौरान जारी परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1: असम के काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क में संरक्षण के लिए विभिन्न पारितंत्रों की जैविकीय

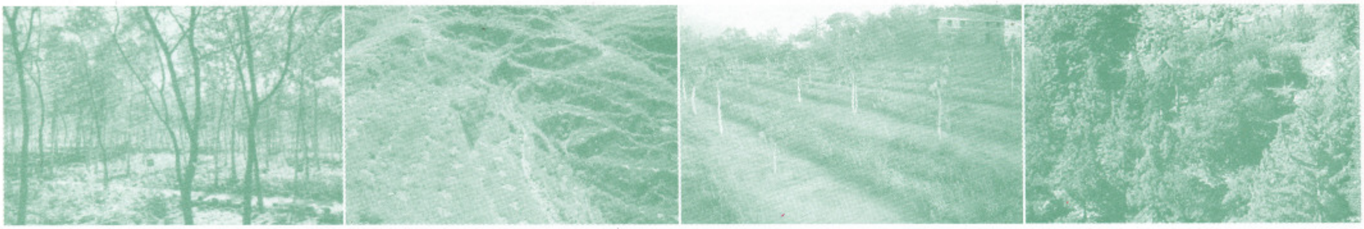

विविधता का मूल्यांकन और विधियां स्थापित करना [आर.एफ.आर.आई / ई.पी.– 2005 / 2003–2006]

स्थिति : काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क में मात्रात्मक संरचना, वन समुदायों की आबादी गतिकी और घासभूमि उत्पादकता का विश्लेषण किया गया। वन भूमि प्रजाति में तीन समुदायों की पहचान की गई। पार्क के अर्ध– सदाहरित वन क्षेत्र में समृद्धता उच्च पाई गई।

घास भूमि गणना और जैवमात्रा अध्ययनों ने लम्बी और छोटी घास समुदायों के सुनिश्चित लक्षण दर्शाए।

एकत्रित आँकड़ों ने काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क, असम में पहली बार संकटापन्न प्रजाति, दुर्लभ आर्किडों और बेंत प्रजातियों की उपस्थिति को उद्‌घाटित किया।

काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क में एक दुर्लभ भू आर्किड (ज्यूक्सिन एफिनिस)

सवाना वन (काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क)

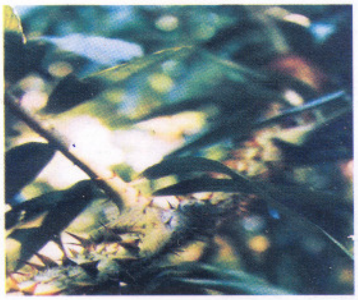

कैलेमस नेम्बीरिन्सिस, के.एन.पी. से एक स्थानिक और संकटापन्न बेंत

परियोजना 2: झूम खेती में परित्यक्त परती के सुधार पर N_2 निर्धारक पादपों का सहयोग [आर.एफ.आर.आई / ई.पी.–04 / 2003–2007]

स्थिति : क्रोटोलेरिया पालिडा के संयोजन के कारण मृदा के रासायनिक गुणों की बेहतर संवृद्धि अभिलिखित की गई। क्रोटोलेरिया पालिडा इसके बाद क्रमशः सेसबेनिया बाइस्पिनोसा और केजेनस केजन के उपयोग के बाद उपलब्ध एन.पी.के. उच्च था। आर्थिक विश्लेषण प्रगति पर है।

परियोजना 3: नागालैण्ड, भारत में जैवविविधता के सतत प्रबन्ध में अंगामी जनजाति की देशज जानकारी [आर.एफ.आर.आई / ई.पी.–03 / 2003–2006]

स्थिति : संसाधन उपयोग पैटर्न जैसे– औषधीय, चारा, वन्य खाद्य पादप, रंजक और गोंद आदि का प्रलेख पोषण पूरा किया गया। इस जनजाति द्वारा प्रयुक्त महत्वपूर्ण औषधीय पादपों को सूचीबद्ध किया गया। अंगामी जनजाति क्षेत्र में शुष्क खाद्य और फसल के परिरक्षण के लिए भी विभिन्न देशी तकनीकों का उपयोग करते हैं।

खाद्य पदार्थ की शुष्कन तकनीक

परियोजना 4: ब्रहमपुत्र नदी में माजूली द्वीप की उत्पादक भूमि और आशाजनक वनस्पति का संरक्षण [आर.एफ.आर.आई / ई.पी.–2005 / 2003–2006]

स्थिति : पी.आर.ए. पद्धति द्वारा क्षेत्र की समस्या रैंकिंग की गई। पी.आर.ए. कार्यपद्धति द्वारा उत्पादकता और बढ़ाने और संसाधन संरक्षण हेतु उत्पादक मृदा और आशाजनक वनस्पति के संरक्षण के लिए सूक्ष्म योजना तैयार की गई। क्षेत्र का संसाधन सर्वेक्षण

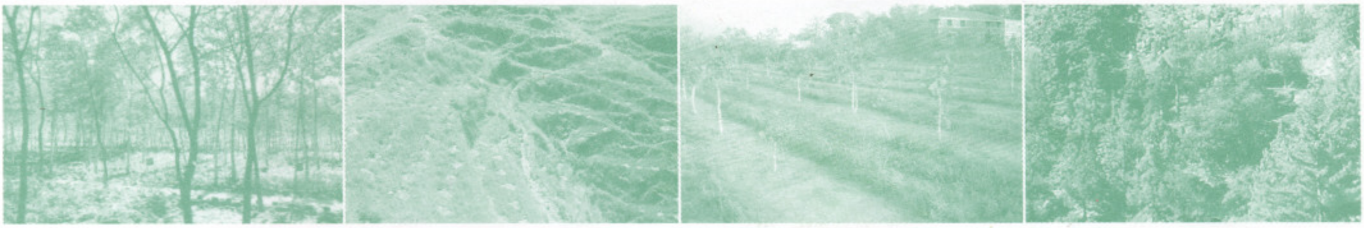

किया गया और 150 औषधीय/आशाजनक पादपों की सूची तैयार की गई।

परियोजना 5: बांस आधारित कायिक बांध द्वारा माजूली में मृदा एवं नदी तट भूक्षरण का नियंत्रण [आर.एफ.आर.आई/ई.पी.–07/2004–2007]

स्थिति : परियोजना स्थल का सीमांकन कर दिया गया है और उपचार क्षेत्र को तकनीकी कार्यक्रमानुसार चार क्षेत्रों में स्तरित किया गया। 12 किसान पौधशालाएं स्थापित की गई और सभी पांच गांवों में ग्राम स्तर समितियां गठित की गई। वानस्पतिक बांध के लिए उपयुक्त अधिक प्रजातियों की पहचान की गई। बांस आधारित मृदा भूक्षरण, नियंत्रण नदीतट सुरक्षा संरचनाओ की स्थापना के लिए जल प्रवाह विक्षेपक, बैंक दीवार आदि जैसे विभिन्न अभिकल्प तैयार किए और भूक्षरण पैटर्न पर आधारित स्थल में स्थापित करने के लिए अन्तिम रूप दिया।

परियोजना 6: पूर्वोत्तर भारत में सूक्ष्म/बृहद प्रवर्धित रोपण स्टॉक बांस प्रजाति के मान्यकरण, परीक्षण और स्थानिक परीक्षण [आर.एफ.आर.आई./ई.पी.–08/2005–2008]

स्थिति : बांस के लिए टी.ई.आर.आई. विन्यास और पद्धतियों के पैकेज के परामर्श के साथ सभी सात पूर्वोत्तर राज्यों में स्थानिक परीक्षण तैयार किए गए।

परियोजना 7: वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, असम में पर–स्थाने संरक्षण के वानस्पतिक उद्यान/केन्द्रों में अवसंरचनात्मक सुविधाओं में सुधार के लिए वित्तीय सहायता [आर.एफ.आर.आई/ई.पी.–09/2003–2006]

स्थिति : शेड एवं पॉली हाउस, आर्किडेरियम के निर्माण और सिंचाई सुविधाओं की स्थापना का कार्य शुरू किया गया है। पूर्वोत्तर क्षेत्र के दुर्लभ आर्किडों की बीस प्रजातियों को एकत्र किया गया।

पूर्वोत्तर के आर्किडों का पर–स्थाने संरक्षण

शेड एवं पॉलीहाउस, जिसे वर्षा वन अनुसंधान संस्थान में वानस्पतिक उद्यान के विकास के लिए पर्यावरण एवं वन मंत्रालय निधीयित परियोजना के तहत बनाया गया

अनुसंधान उपलब्धियां

राज्य का नाम	2004–2005 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2004–2005 में जारी की गई परियोजनाओं की संख्या	2004–2005 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
असम	2	17	3
मेघालय	–	6	1
मणिपुर	–	4	–
त्रिपुरा	–	5	–
नागालैण्ड	–	4	–
मिजोरम	–	3	–
अरूणाचल प्रदेश	–	3	–

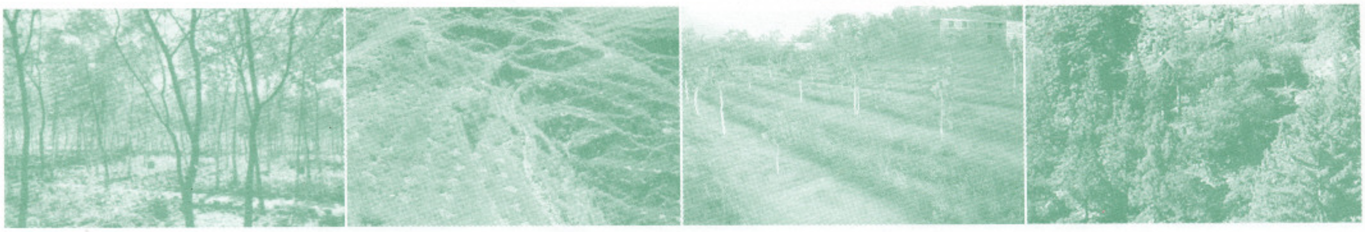

प्रौद्योगिकी मूल्यांकित और हस्तान्तरित

किसान पौधशाला धारकों के लिए 1 और 2 अप्रैल, 2004 को माजूली में कम्पोस्टिंग और वर्मिकम्पोस्टिंग पर स्थल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

असम तथा अरूणाचल प्रदेश के फॉरेस्टरों और फॉरेस्ट गार्डों के लिए आर.एफ.आर.आई. में बांस के विभिन्न पहलुओं पर तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

शिक्षा और प्रशिक्षण

डा. ए.एन. सिंह, वैज्ञानिक–सी और डा. के पन्नीर सेल्वम वैज्ञानिक–बी ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् देहरादून में 23 से 27 नवम्बर, 2004 तक "एडवान्सड एन्वायरमेन्टल मैनेजमेन्ट सीस्टम, ऑडिटर ट्रेनिंग कोर्श (आई.ई.एम.ए. एप्रूव्ड)" पर प्रशिक्षण एवं कार्यशाला में भाग लिया।

सहानुबंध और सहयोग

वानिकी और वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत पूर्वोत्तर राज्यों के राज्य वन विभागों तथा अन्य अनुसंधान संगठनों, यथा– जी.बी.पं, एन.एम.बी.ए., पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, टी.बी.टी, डी.एस.टी, एन.ई.सी. और गैर सरकारी संगठनों के साथ सहानुबंध एवं सहयोग स्थापित किया गया।

प्रकाशन

सारांश

1. कौशिक, पी.के. और त्रिपाठी, व्हाई. सी. (2004): मॉडयूल्स फॉर कम्यूनिटी बेस्ड मैनेजमेंट ऑफ बायोलॉजिकल इम्बैंकमेंट प्रोग्राम, कटाव एवं भूक्षरण पर द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 14से17 नवम्बर, 2004, सिंगापुर।

2. कौशिक, पी.के.; पाण्डे, बी.के. और त्रिपाठी, व्हाई.सी. (2004): मैडिसिनल प्लान्ट बेस्ड एग्रो फॉरेस्ट्री फॉर टैकलिंग रा मैटिरियल क्राइसेस इन हर्बल ड्रग इन्डस्ट्रीज़। नई दिल्ली में 25 से 29 अक्टूबर, 2004 तक सेन्चुरी फाउन्डेशन द्वारा आयोजित औषधीय और सुरभित पादपों पर द्वितीय विश्व सम्मेलन में।

3. कौशिक, पी.के.; पाण्डे, बी.के. और त्रिपाठी, व्हाई.सी. (2004): पार्टिसिपेटरी एप्रोच टू वाटरशेड मैनेजमेन्ट इन इंडिया। केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून में भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण एसोसिएशन द्वारा 7 से 9 दिसम्बर, 2004 तक आयोजित "सामाजिक उत्थान के लिए संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियां" पर राष्ट्रीय सम्मेलन।

4. पाण्डे, बी.के.; कौशिक, पी.के. और त्रिपाठी, व्हाई.सी. (2004): मैडिसिनल फ्लोरा ऑफ माजूली आइसलैण्ड–ऐन ईथनोबॉटेनिकल अप्रेजल। सेन्चुरी फाउन्डेशन द्वारा नई दिल्ली में 25 से 29 अक्टूबर, 2004 तक सेन्चुरी फाउन्डेशन द्वारा आयोजित औषधीय और सुरभित पादपों पर द्वितीय विश्व सम्मेलन।

5. पाण्डे, बी.के.; त्रिपाठी, व्हाई.सी. और कौशिक, पी.के. (2004): स्वायल स्टैबिलाइजेशन एण्ड रीबरबैंक प्रोटेक्श्न थ्रो बैम्बू बेस्ड बायोलॉजिकल इम्बैंकमेन्ट अराउन्ड माजूली आइसलैण्ड। सातवीं विश्व बांस काग्रेंस, 2004, 27 फरवरी से 4 मार्च, 2004, नई दिल्ली।

6. सिंह, जे; और बोरा, आई.पी. (2004): स्केर्ड ग्रूव्स ऑफ मेघालय स्टेट्स, फ्लोरिस्टिक कम्पोजिशन एण्ड कन्जरवेशन स्ट्रैटीजिज। वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान कोयम्बटूर द्वारा 27 और 28 मई, 2004 को आयोजित पवित्र बागों के संरक्षण के लिए रणनीति पर राष्ट्रीय कार्यशाला।

7. सिंह, ओमबीर और जार्ज, एम. (2005): कन्जरवेशन ऑफ जैनेटिक रीसोर्सेज ऑफ नान–मलवेरी होस्ट ट्रीज इन नार्थ ईस्ट इंडिया। केन्द्रीय मूगा इरि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार, लाहदोईगढ़, जोरहाट, असम द्वारा 10 और 11 मार्च, 2005 को आयोजित गैर शहतूत जननदृव्य पोषण के लिए रणनीति पर कार्यशाला में पी.पी. : 37–44 ।

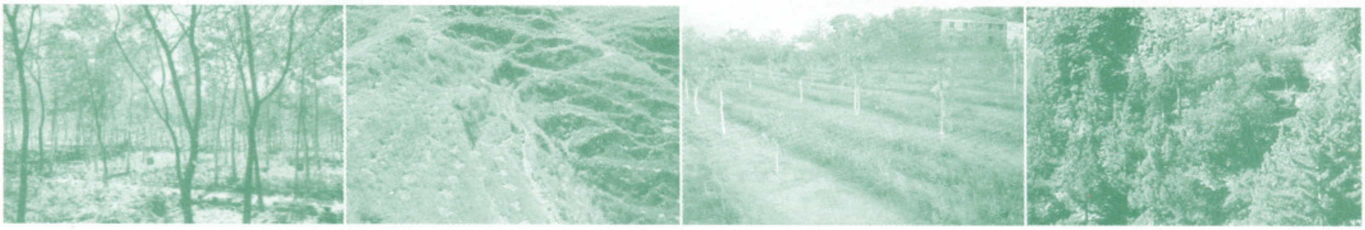

8. सिंह, ओमवीर और महन्ता, एन. : जैनेटिक इम्प्रूवमेन्ट ऑफ खासीपाइन (पाइनस केसिया) इन नार्थईस्ट इंडिया। साउथ कैरोलिना, यू.एन.ए. में जीनोमिक्स के युग मेंवन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन पर यूफरों सम्मेलन में 2004 में स्वीकार्य सारांश।

9. त्रिपाठी, व्हाई, सी. और पाण्डे, बी.के. (2004): सोसियोईकॉनॉमिक एंड एन्वायरमेन्टल इम्पैक्ट ऑफ बायोलॉजीकल इम्बैंकमेन्ट ऐट दी इरोडिंग बैंक ऑफ माजूली आइसलैण्ड इन ब्रह्मपुत्रा रिवर । कटाव एवं भूक्षरण (आई.सी.एस.ई.–2) पर द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 14 से 17 नवम्बर, 2004, सिंगापुर।

10. त्रिपाठी, व्हाई.सी., कौशिक, पी.के. और पाण्डे, बी. के. (2004): मॉर्डन फाइटोमेडिसीन्स– पैराडिगम ऑफ एन्सिएन्ट मॉर्डन कांकरडेन्स। सेन्चुरी फाउन्डेशन द्वारा नई दिल्ली में 25से 29 अक्टूबर, 2004 तक आयोजित औषधीय एवं सुरभित पादपों पर द्वितीय विश्व सम्मेलन।

11. त्रिपाठी, व्हाई.सी., कौशिक, पी.के. और पाण्डे, बी.के. (2004): बैम्बू आइडेन्टीफिकेशन– एमॉर्फोलॉजिकल कन्सिडरेशन सातवाँ विश्व बांस कांग्रेस, 2004, 27 फरवरी से 4 मार्च, 2004, नई दिल्ली।

12. त्रिपाठी, व्हाई.सी., कौशिक, पी.के. और पाण्डे,बी.के. (2004): कन्जरवेशन ऑफ एन.टी.एफ.पीज़ फॉर इफिसिएन्ट फॉरेस्ट मैनेजमेन्ट। केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून में भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण एसोसिएशन द्वारा 7 से 9 दिसम्बर, 2004 तक आयोजित "सामाजिक उत्थान के लिए संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियां" पर राष्ट्रीय सम्मेलन।

13. त्रिपाठी, व्हाई.सी., पाण्डे,बी.के. और कौशिक, पी.के. (2004): रीवरबैंक इरोजन–बायोइम्बैंकमेन्ट, सातवाँ विश्व बांस काग्रेंस, 27 फरवरी, 2004 से 4 मार्च, 2004, नई दिल्ली।

तकनीकी बुलेटिन

मीणा सी.आर., त्रिपाठी, व्हाई.सी. और सैकिया, डी. (2004): पॉजिटिव रिस्पान्स टू सलैक्शन फॉर फ्लावरिंग्स इन डिप्टीरोकॉर्पस रिटूसस–फ्यूचर प्रॉस्पेक्ट्स। आइ.सी.एफ.आर.ई. बुलेटिन, न्यूज लैटर, 2004 को प्रस्तुत।

परामर्श

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान ने जनवरी, 2005 को एकीकृत वनीकरण एवं पारि–विकास परियोजना के तहत राष्ट्रीय वनीकरण एवं पारि–विकास बोर्ड, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित नागालैण्ड के दीमापुर जिले में वनीकरण एवं वृक्ष रोपण कार्यकलापों के मूल्यांकन पर परामर्श को सफलतापूर्वक पूरा किया।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमिनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनी

आयोजित

1. वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट ने 14 दिसम्बर, 2004 को बाँस प्रजातियों के रोपण स्टॉक पर एक बैठक का आयोजन किया इस बैठक को जैव प्रौद्योगिकी वन विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया।

2. वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में 15 फरवरी, 2005 को छठीं अनुसंधान सलाहकार समूह की बैठक सम्पन्न हुई।

3. संस्थान में 1 से 6 नवम्बर, 2004 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह सम्पन्न हुआ। समारोह के दौरान "वर्षा वन अनुसंधान संस्थान में अनुसंधान उच्चीकरण के लिए सतर्कता की आवश्यकता" शीर्षक के तहत एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया और "अनुसंधान में सतर्कता क्यूँ है" शीर्षक के तहत एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

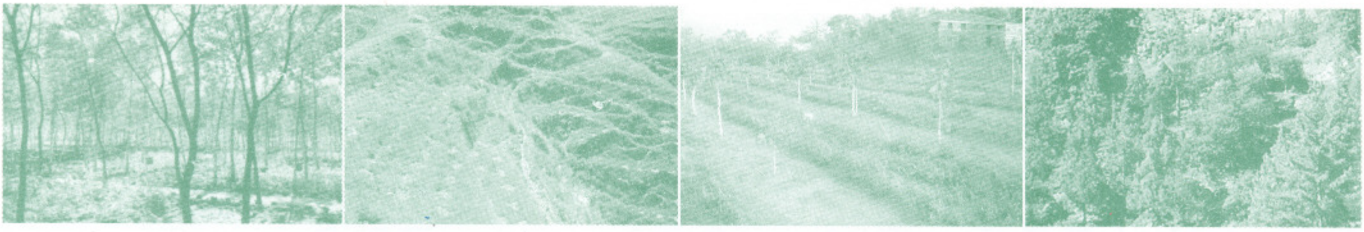

सहभागिता

1. डा. व्हाई.सी. त्रिपाठी, वैज्ञानिक–ई ने 15 और 16 जनवरी, 2005 को जे.बी. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पन्त नगर में सम्पन्न बाँस स्थान निध ारण परीक्षण पर एल.एम.बी.ए. प्रायोजित गोलमेज बैठक में भाग लिया।

2. डा. व्हाई.सी. त्रिपाठी, वैज्ञानिक–ई ने डी.वी.टी, नई दिल्ली में 8 फरवरी, 2005 को सम्पन्न परियोजनाओं के मूल्यांकन के लिए विशेषज्ञ समूह बैठक में भाग लिया।

3. वर्षा व.अ.सं. ने 2 से 4 मार्च, 2005 तक असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट में किसान मेले में वैज्ञानिक प्रदर्शनी एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शन में भाग लिया।

4. संस्थान ने 11 से 17 फरवरी, 2005 तक काजिरंगा शताब्दी समारोह के दौरान सम्पन्न प्रदर्शनी में भाग लिया।

5. डा. एम. जॉर्ज और डा. ओमबीर सिंह ने केन्द्रीय मूंगा एवं इरि. अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान लाहदोईगढ़, जोरहाट द्वारा 10 और 11 मार्च 2005 को आयोजित गैर शहतूत जननद्रव्य रखरखाव के लिए रणनीति में भाग लिया।

6. डा. तिलक हज़ारिका, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड–II ने 2 और 3 नवम्बर, 2004 को गुवाहटी में सम्पन्न पूर्वोत्तर भारत के लिए राष्ट्रीय सूचना एवं अभिलेखागार के निर्माण पर मीडिया ट्रस्ट, असम द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया और रोल ऑफ मीडिया इन लारनेसिंग सस्टेनेबल मैनेजमेंट ऑफ एन्वायरमेंट एण्ड फॉरेस्ट इन नॉर्थ ईस्ट इण्डिया।

7. डा. तिलक हज़ारिका, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड–II ने 31 दिसम्बर, 2004 से 3 जनवरी, 2005 तक कोलकाता में सम्पन्न इक्कीसवें आइ.ए.एस.एल.आई.सी. राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया और इनफॉर्मेशन इनपुट फॉर रूरल डेवलपमेन्ट इन एग्रीकल्चरल एण्ड फॉरेस्ट सर्विसेज : एन असेसमेन्ट शीर्षक से एक शोधपत्र प्रस्तुत किया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

श्री वी.एस. ओबरॉय, सलाहकार, एन.एम.बी.ए. (टी.आई.एफ.ए.सी.) ने 14 दिसम्बर, 2004 को इस संस्थान का दौरा किया।